हमारा परमेश्वर ऐतिहासिक है

सृष्टिकर्त्ता के रूप में, परमेश्वर ने हमारे रहने का संदर्भ उपलब्ध कराया। हम पृथ्वी के हैं। परमेश्वर ने हमारे लिए एक आदर्श स्थान का प्रबन्ध किया जिसमें हम उसके, एक दूसरे के और प्रकृति के साथ मिलकर रह सकें। यह ''पृथ्वी पर स्वर्ग'' पाप के संसार में प्रवेश करने पर विलुप्त हो गया था। पाप के कारण वह प्रथम मानव दंपत्ति परमेश्वर से दूर हो गया था। पृथ्वी के कुछ प्रतिकूल लक्षण दिखाई देने लगे जिससे उनके लिए जीवन कठिन हो गया था। शैतान क्रुद्ध हो गया। परमेश्वर और शैतान के बीच का बड़ा युद्ध और भी बढ़ गया।

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने साथ पूर्ण संगति का मार्ग चुनने का ढंग उपलब्ध कराया था। उस मार्ग का जोखिम वास्तविक था। उस सम्बन्ध को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक था। ऐसा न होने पर, पसंद चुनने की उनकी योग्यता व्यर्थ और बेकार हो जानी थी और यह सम्बन्ध मशीन की तरह, रोबोट जैसा अर्थात दास बनाने जैसा होता। आदम और हव्वा ने एक भयंकर भूल कर दी। उन्होंने जान बूझकर, गलत पसन्द चुनी। उसके परिणाम अवाक् कर देने वाले थे और कई तो उसी समय मिल गए थे। जीवन-दाता आत्मा का विरोध हुआ था जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था। जिस दिन उन्होंने पाप किया था उसी दिन उन्हें उससे अलग कर दिया गया था। मृत्यु का अर्थ ही जुदाई है। आदम और हव्वा को जीवन के वृक्ष से दूर कर दिया था; इसलिए, उनके लिए शारीरिक मृत्यु निश्चित थी।

हम कहते हैं ''यह तो बहुत बुरा हुआ!'' हमें उन पर कितनी ही दया आती है! परन्तु हमें अहसास होना चाहिए कि यह कहानी का अन्त नहीं है। उनके पाप के परिणाम केवल उन तक ही सीमित नहीं थे। जिस प्रकार झील के खड़े पानी में पत्थर फैंकने पर पानी की तरंगें किनारे तक पहुंच जाती हैं, उसी प्रकार उनके पाप के परिणाम हम तक पहुंचते हैं। पाप, दण्ड, और मृत्यु सब मनुष्यों तक पहुंच चुके हैं। ''इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23)। ''इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सब ने पाप किया'' (रोमियों 5:12)। ''इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ'' (रोमियों 5:18क)। हम भी, जो ज़िम्मेदार हैं अदन के उस ''बाग के बाहर'' खड़े हैं। अनुग्रह से उनका गिरना हमारे गिरने का भी कारण बना था। परमेश्वर से उनकी जुदाई उससे हमारी जुदाई का कारण बनी। हम

परमेश्वर के सामने खड़े होकर यशायाह की तरह पुकारते हैं, ''हाय! हाय! मैं नाश हुआ'' (यशायाह 6:5क)।

क्या हमें आशा नहीं है? क्या हम शैतान के घृणित अजायबघर में लगने वाली वस्तुओं में से एक बनने वाले हैं? क्या हम अपने जीवों को सदा तक अपने साथ रखने के परमेश्वर के प्रयास की असफलता का अनन्तकाल का प्रमाण होने वाले हैं? ये सब प्रश्न हैं तो बड़े गम्भीर, परन्तु हम एक लय में ज़ोर देकर इनका उत्तर दे सकते हैं, ''नहीं।'' हमें उम्मीद छोड़ने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने यह सब हम पर नहीं छोड़ा है। हम वास्तव में परमेश्वर की विजय को प्रमाणित और असफलता के किसी भी विचार को खारिज कर सकते हैं। ये बातें हैं तो उत्साह बढ़ाने वाली, परन्तु क्या उनका कोई वास्तविक अर्थ भी है? क्या इनका कोई आधार है? क्या भरोसा है कि यह हमारी कोरी कल्पना ही नहीं है? इसका उत्तर देने के लिए केन्द्र बिन्दु किसी और बात को बनाना होगा। इसका उत्तर हमें अपने आप से नहीं बल्कि परमेश्वर से पूछना चाहिए।

पिछले पाठ में हमने परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य पर विचार किया था। हमने उसकी बुद्धि, उपस्थिति और सामर्थ के कामों पर विचार किया था। हमने यह भी देखा था कि उसने मनुष्य को अपनी संगति में रखने के लिए बनाया था। यह सब हमने उसके सृजनात्मक कार्य में देखा था। इसके अतिरिक्त, हमने ''पृथ्वी पर स्वर्ग'' के एक नमूने के रूप में इस संगति का संदर्भ देखा था। यह निष्कर्ष निकालना भयंकर भूल होगी कि हर बात का अन्त असफलता में हुआ। हम निर्णायक तथ्यों को अनदेखा कर रहे होंगे कि परमेश्वर न केवल सृजनात्मक ही है बल्कि वह ऐतिहासिक भी है। इतिहास में किया गया उसका कार्य हमारे लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना सृष्टि को बनाने में किया उसका कार्य। पहली बात तो यह कि यदि उसने हमें नहीं बनाया होता, तो हमारा अस्तित्व ही न होता। दूसरा, यदि वह सृष्टि के अपने इतिहास में सक्रिय न होता, तो हमारा नाश हो चुका होता।

हमें कैसे पता लग सकता है कि परमेश्वर इतिहास में काम कर रहा है? इसका पता हमें वैसे ही चलता है जैसे सृष्टि को बनाने में उसके कार्य का। सृष्टि उसकी हस्तकला को प्रकट करती है; जबकि इतिहास उसके भाग लेने को। बाइबल में हमें परमेश्वर के सृजनात्मक तथा ऐतिहासिक कार्य दोनों का ही वर्णन मिलता है।

इतिहास के बाहर परमेश्वर

बाइबल के लिए परमेश्वर को ऐतिहासक रूप से देखने से बढ़कर कोई आधार नहीं है। परमेश्वर समय के साथ-साथ अनन्तकाल में भी रहता है। आइए समय को अनन्तकाल के सागर में एक पनडुब्बी की तरह देखें। हम एक पनडुब्बी में रहते हैं। हम इस समय केवल उस छोटे से बर्तन में मिली जगह में बन्द हैं। उस पनडुब्बी के अन्दर इतिहास रचा जा रहा है। परन्तु, परमेश्वर न केवल उस पनडुब्बी (समय) में ही है, बल्कि वह समुद्र (अनन्तकाल) में भी है। पनडुब्बी में उसके कार्य समुद्र में उसके परिपेक्ष्य से लिए जाते हैं। हमारे लिए इन बातों के बड़े अर्थ हैं।

पहला, हमारे पास तो उसका परिप्रेक्ष्य नहीं है इसलिए हमें उसके कार्यों की हर बार समझ नहीं आती या हम उन्हें देख नहीं पाते हैं। दूसरा, जैसे सृष्टि में उसके कार्य को अन्तिम परिणाम में देखा जा सकता है, वैसे ही उस जहाज को चलाने के ढंग से इतिहास में उसकी उपस्थिति को देखा जा सकता है (भजन 19:1)। तीसरा, जैसे सामान्य प्रकाशन (प्रकृति) तथा विशेष प्रकाशन (बाइबल) में हम परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य को देख सकते हैं, वैसे ही हम उसके ऐतिहासिक कार्य को भी देख सकते हैं। हो सकता है कि हमारे लिए सामान्य इतिहास में उसके कार्य को पहचानना कठिन हो, परन्तु अपने चुने हुओं के साथ उसके व्यवहार के बाइबल के वृत्तांत में विशेष रूप से समझाया गया है। इसलिए इतिहास में सक्रिय परमेश्वर पर विचार करने के लिए हम बाइबल के पास जाते हैं।

परमेश्वर इतिहास के भीतर

बाइबल हमें अद्‌भुत बातों की जानकारी देती है। हमें पता चलता है कि इतिहास उन शृंखलाबद्ध घटनाओं से कहीं बढ़कर है। इसमें एक उद्देश्य दिखाई देता है। हमारे लिए परमेश्वर का संदर्भ पहले एक सृष्टि का सदंर्भ था। अब यह एक ऐतिहासिक संदर्भ है। पहले संदर्भ के पाप से गंदा होने के कारण परमेश्वर ने उसे हम पर नहीं छोड़ा। दूसरा संदर्भ हमें पाप से बचने का अवसर देता है। इसलिए इतिहास को प्राय: ''उद्धार का इतिहास'' कहा जाता है।[1] इसका अर्थ यह नहीं कि इतिहास की हर बात में उद्धार है बल्कि इसका अर्थ यह है कि इतिहास में भी उद्धार के लिए परमेश्वर के पास उद्देश्य हैं।

उद्धार के उद्देश्य को कई बार परमेश्वर द्वारा अपनी महान परिकल्पना को पूरा करने के लिए इतिहास में लोगों को निर्देश देने के ढंग में देखा जाता है। परमेश्वर ने नूह को अपने, अपने परिवार और सब प्रकार के जीवों को बचाने के लिए एक बड़ा जहाज़ बनाने का निर्देश दिया था। निश्चय ही, नूह और उसके परिवार के लिए यह एक शुभ समाचार था, परन्तु मनुष्य जाति के लिए यह और भी अच्छा समाचार था। बुराई का पेट साफ़ कर दिया गया था और जीवन को बचा लिया गया था (उत्पत्ति 6:1–9:17)। परमेश्वर ने नूह को बचाया, परन्तु उसके पास इससे भी बड़ी योजनाएं थीं।

परमेश्वर ने अब्राम को अपना घर व अपने लोग छोड़कर एक ऐसे देश में जाने के लिए कहा जिसे वह जानता नहीं था। परमेश्वर ने इस व्यक्ति को ऐसा असाधारण कार्य करने के लिए क्यों कहा? परमेश्वर की यह योजना थी कि अब्राम, जिसका अर्थ ''महिमा प्राप्त पूर्वज'' था, इब्राहीम अर्थात ''बहुतों का पूर्वज'' बने और उसके द्वारा पृथ्वी की *सभी जातियां* आशीष पाएं। इब्राहीम इब्रानी अर्थात इब्रानी लोगों का पिता बन गया (उत्पत्ति 12:1–4; 14:13; यशायाह 41:8), और अन्तत: प्रत्येक व्यक्ति जो यीशु को मसीह (*yeshua hammashiach*) मानकर उसके आगे समर्पण करके इब्राहीम का वंश बने (गलतियों 3:26–29)। इतिहास की दिशा परमेश्वर के हाथों में थी।

इब्राहीम के परपौत्र यूसुफ का जीवन महत्वपूर्ण और मनमौजी रहा था। किसके मन में आया होगा कि कनान के एक खानाबदोश परिवार का सरदार फिरौन की सेना के सेनापति

के घर गुलाम बन जाएगा। किसे पता था कि यह इब्रानी गुलाम लज्जित होगा और उसे कैद किया जाएगा, परन्तु अन्त में मिसर में, फिरौन के महत्वपूर्ण पद पर विराजमान होगा ? अन्त में क्या कोई भविष्यवाणी कर सकता था कि यूसुफ परमेश्वर के लोगों अर्थात इब्रानियों को बचाने के लिए आएगा।

इतिहास में परमेश्वर को कार्य करते देखना सामान्यत: असम्भव होता है। परन्तु हमें उसका पूर्वप्रबन्ध किखाई नहीं देता तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह काम नहीं कर रहा है। परमेश्वर का उद्देश्य यूसुफ को बचाने से बढ़कर उसे दिशा देने का था (उत्पत्ति 45:4-15)। यह अपने लोगों को सम्भाले रखने और उन्हें बढ़ाने के लिए था!

एक के बाद एक घटनाओं से मिसर की शान को मिट्टी में मिला दिया गया था। इब्रानी शिशु मूसा को जन्म लेते ही मृत्यु मिलने वाली थी, क्योंकि सभी इब्रानी नर बच्चों को मार डालने की आज्ञा थी। वह परमेश्वर की योजना के अनुसार एक असम्भावनीय घटना में मृत्यु से बच गया और नील नदी में फिरौन की बेटी को मिल गया। इब्रानी दासों के इस पुत्र का पालन-पोषण राजा के महल में हुआ था। यहूदी इतिहासकार जोसेफस और मसीही लेखक टरटुलियन[2] दोनों ने ही मूसा के बारे में लिखा है। उनका दावा था कि मूसा मिसरी सेना में एक बड़ा जरनैल था और उन्होंने इथियोपियन लोगों पर उसकी सैनिक विजय का वर्णन किया।[3] बाद में मूसा सीनै प्रायद्वीप में भाग गया और वहां पर अस्सी वर्ष की आयु तक संसार के मामलों से दूर रहा।

जंगल में, उसे परमेश्वर की ओर से उसके लोगों को मिसर से छुड़ाने के लिए निर्देश मिला था। एक चरवाहे द्वारा मिसर के फिरौन से यह कहने की कल्पना कीजिए कि उसे क्या करना चाहिए! फिरौन ने ढीठ होकर अपने लाखों गुलामों को छोड़ने से इन्कार कर दिया। परन्तु देश में बड़े कष्ट और गड़बड़ी और हर मिसरी के घर में शोक होने के कारण उसे झुकना पड़ा। इब्रानी लोग मिसर की दासता से छूट गए और सीनै पहाड़ पर एक स्वतन्त्र जाति बन गए। इतिहास की दिशा बदल गई थी। एक बार फिर, एक ऐतिहासिक परमेश्वर ने अपनी सामर्थ व पूर्वप्रबन्ध को दिखा दिया था (निर्गमन 3-20)।

यहोवा के काम बड़े हैं,
जितने उन से प्रसन्न रहते हैं, वह उन पर ध्यान लगाता है।
उसके काम विभवमय और ऐश्वर्यमय होते हैं,
और उसका धर्म सदा तक बना रहेगा।
उसने अपने आश्चर्यकर्मों का स्मरण कराया है;
यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है।
उसने अपने डरवैयों को आहार दिया है;
वह अपनी वाचा को सदा तक स्मरण रखेगा।
उसने अपनी प्रजा को अन्यजातियों का भाग देने के लिए,
अपने कामों का प्रताप दिखाया है।
सच्चाई और न्याय उसके हाथों के काम हैं;

उसके सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं ...
उसने अपनी प्रजा का उद्धार किया है;
उसने अपनी वाचा को सदा के लिए ठहराया है।
उसका नाम पवित्र और भययोग्य है
(भजन संहिता 111:2-9)।

पाद टिप्पणियां

[1]हेयन्ज़ जहरंट, द *क्वैश्चन ऑफ़ गॉड* (न्यूयॉर्क: हारकोर्ट ब्रेस जोवानोविच, 1969), 287. [2]टरटुलियन लातीनी भाषा में पहले बड़े मसीही लेखकों में से एक था। वह दूसरी शताब्दी के अन्त और तीसरी शताब्दी के आरम्भ में हुआ है। [3]जोसेफस *ऐन्टीक्वीटीस* 2:10 और पाद टिप्पणियां।